ॐ

॥ श्री शारदा विजयतेतराम् ॥

श्री शारदा सहस्रनाम स्तोत्रम्

[नामावलि सहितम्]



संकलनकर्ता : स्वामी सच्चिदानन्द पुरी



श्रीशारदा सहस्र नामावली

ॐ सौ ह्रीं श्रीं नीलसरस्वती

ह्रौं ऐं ह्रीं श्रीसरस्वती

ॐ ऐं क्लीं सः शारदा

ऐं

ॐ वद वद वाग्वादिनी

ॐ श्रीं ह्रीं शारदा

नामावली कर्ता

स्वामी सच्चिदानन्दपुरी (चैतन्य)

प्रकाशक—

स्वामी सच्चिदानन्द पुरी

प्रथम संस्करण–१००० प्रतियाँ

जुलाई १९९४

प्राप्तिस्थान—

☐ पं० राधाकृष्ण राजदान
सुभाष नगर, जम्मू

☐ बी. एन. कोल
डी–1, पंपोश एन्क्लेव
नई दिल्ली।

मुद्रक—

श्रीहरिनाम प्रेस, बाग बुन्देला, लोई बाजार, वृन्दावन.

ॐ

किञ्चित् वक्तव्य

अपार अथाह संसार सागर अनादि और अनन्त है। जिसे पार करने के लिये ऋषि, मुनि और भक्तगण निरन्तर घोर तपस्या और साधन कर देवी-देवताओं से इष्ट सिद्धि प्राप्त करते थे। वही मार्ग आज तक चलरहा है और चलता रहेगा।

हिमालय की गोदी में कश्यप ऋषि के द्वारा बसाया गया कश्मीर ऋषि-मुनियों का तपोभूमि है। यहाँ देव, गन्धर्व, यक्ष और किन्नर लीला स्थल है। इसी कारण इसे 'भूतल स्वर्ग' कहा है। शाण्डिल्य ऋषि नेभी कई वर्षों तक शारदा देवी प्रसन्न करने के लिये तपस्या की। इस बातको भगवती भैरवी भगवान् भैरव से कहती है—

भगवन् या महादेवी शारदाख्या सरस्वती।
काश्मीरस्यां स्वतपसा शाण्डिल्येनावतारिता॥

अब बात यह है कि काश्मीर प्रान्त बहुत दूर तक फैला हुआ था आधा वर्तमान पाकिस्तान में चला गया उसी के अन्तर्गत शाण्डिल्य का तपोभूमि शारदा पीठ (कृष्ण गङ्गा के तटपर स्थित) चला गया। ई. सन्. १९४७ से पहले देश-देशान्तरके भक्त जन श्रीशारदा जी का दर्शन करने जाते रहे अब वह स्थान हमारे लिये दर्शन दुर्लभ हो गया।

आदि जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज काश्मीरस्थ श्रीशारदा पहुँच कर घोर तपस्या करके शारदा जी को दक्षिण-

देश ले गये और कर्नाटक प्रान्त में स्थिर किया। आज भी वहाँ 'मुखाम्बिका' नाम से प्रसिद्ध है। शारदा पीठकी अधिष्ठात्रि देवता 'मेधाशक्ति' मानी जाती है। देवी के शक्ति स्थल पीठ में चौथा स्थान यही माना जाता है। इसकी शक्ति महामाया-मेधा और भैरव त्रिसन्देश्वर है। परम्परा से यह स्थान काश्मीर राजा के संरक्षण में था। यहाँ शारदा नाम का गांव भी है। आस पास में गुर्ज्जर जाति निवास करते हैं और इस स्थान पर अत्यन्त आदर और श्रद्धा रखते हैं। यहाँ के पुजारी जी कहते हैं कि फसल निकलते ही कुछ अनाज देवी के आँगन में छोड़ जाते थे। इसी तरह गाय का दूध देवीके सामने कृष्ण गङ्गा में छोड़ते थे।

इस दर्शनीय स्थान की यात्रा भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्थी को आरम्भ होती है और अष्टमी के दिन पहुँच कर विशेष रूप से पूजा करते थे। यहाँ पशु बलि का विशेष महत्व है। इसलिये यहाँ बलि चढ़ाते हैं। यात्रा बहुत कठिन है। कुछ लोग इस शारदा को इङ्गला या मङ्गला नाम से पुकारते हैं परन्तु यह नाम मुजफराबाद (आज पाकिस्तान में) के कुछ आस-पास के लोग कहते हैं परन्तु कश्मीर में शारदा या शारदा पीठ से प्रसिद्ध है। इस स्थान पर पहुँचने के लिये तीन रास्ते हैं। अधिक तरह लोग टिकर या त्रगांय से निकलते हैं यह दोनों रास्ते पर्वत घाटियों से गुजरते हैं रास्ते में बटपुरा, गोतमडोर, गणेशपुर आदि छोटे छोटे गाँवों को पार करते हुये रास्ते में रुद्रवन भी मिलता है आगे चलकर दुधिनाला जाकर कृष्ण गङ्गा पार कर शारदा पहुँचते हैं। शारदा मन्दिर ऊंचे पहाड़ पर है। मन्दिर तक ६४ (चौसठ) सीढियां हैं यह ४ योगिनियों

के नाम से जाना जाता है। तीसरा रास्ता बारामुला से उडी, उडी से मुजफराबाद होकर शारदा पहुँचते हैं। यह रास्ता लम्बा और बहुत समय लगता है प्राय सब लोग टिकर से हो जाते हैं।

अब यह सब स्मरण मात्र ही रह गया है। जो भी हो मेरा लक्ष्य शारदा सहस्रनाम स्तोत्र से है। आज भी काश्मीर की जनता शारदा अष्टमी अवश्य मनाते हैं, उस दिन यज्ञ-याग पूजा पाठ अवश्य करते हैं। लेकिन यज्ञ में शारदा सहस्रनाम पढ़ने की पृथा है इसके अभाव में राज्ञा या भवानी सहस्रनाम पाठ करते हैं। मैं शारदा सहस्रनाम की खोज में कश्मीर के बहुत से पण्डित वर्ग से सम्पर्क किया लेकिन जवाव यही मिला कि "हमारा पाठ शारदाके साथ ही चला गया" दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु प्रयास जारी रखा ई. सन् १९७५ में श्रीमान राधा कृष्ण राजधान (बांडिपुरा कलूसा) के यहां से हस्तलिपि शारदा अक्षरों में प्राचीन छोटी सी पुस्तिका मिली, इसी के सहारे नागरी लिपि में अनुवादित करने का सुअवसर मिला। प्राचीन पुस्तक होने के कारण कुछ अक्षर मिट गये, उन सबको यथा योग्य सुसज्जित कर प्रकाश में लाया हूँ। इसके अनन्तर विद्वानों को दिखाया उनका आर्शीवाद भी मिलेगा। श्रद्धेय लाल पुरी जी महाराज भी पढ़कर बहुत प्रसन्न हुये और छापने को प्रेरणा दी। शारदा सहस्रनामवालो भी बनाया हूँ जिसे यज्ञ में भी और अर्चना में भी सदुपयोग हो सके। नामावली सहस्र से अधिक ही आती है कारण यह है कि श्लोक मात्रा अधिक है। खैर मैं यही सोचता हूँ कि भगवती की इच्छा से ही सब कुछ हुआ। श्रीराधाकृष्ण राजदान को धन्यवाद देता हूँ प्रथम

सहयोग उनका ही है सपरिवार को भगवती का आर्शीवाद मिलता रहे। परम पूज्य गुरुमहाराज की कृपा से मेरा प्रयास आप तक पहुँचा है, इसका श्रेय श्रीगुरु चरणों में समर्पित हो। पाठक को भी इष्ट सिद्धि हो।

वर्तमान काश्मीर दुर्दान्तों में फंसा हुआ है और तीक्ष्ण नखों में विदीर्ण हो रहा है। सब कुछ बिखर चुका है। अब सरकार की ओर मुँह ताक रही जनता यह सोच रही है कि खोई हुई जमीन जायदाद और तीर्थ स्थलों का दर्शन हो। भगवती मेधा शक्ति सबको सद्बुद्धि दे, इस त्रास से मुक्ति मिले।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

विदुषां वशंवदः
स्वामी सच्चिदानन्द पुरी
सन्यास आश्रम
श्रीशिव मन्दिर
बाडिपुर (कश्मीर)





श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पूज्यपाद
श्री १०८ श्रीस्वामी प्रेमानन्दपुरी जी महाराज
(मौनी बाबाजी कश्मीर वाले)





❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

—: अथ श्रीज्ञानगुरु पञ्चकम् :—

सत्यं शान्तं शान्तस्वरूपं सत्पन्थं
सन्तं सख्यं सज्जनहृदयं सच्चरितम् ।
शुद्धं बुद्धं बोधस्वरूपं बोधव्यम्,
वन्दे मौनिं त्रिगुणातीतं गुरुपादम् ॥१॥

वन्द्यमर्चमार्तविहीनमवशेषम्,
प्रेमाराध्यं प्रेमस्वरूपं प्रणवेशम् ।
मौनाराध्यं मोहविनाशं मदनाशं,
वन्दे मौनिं सर्वसहायं गुरुमूर्तिम् ॥२॥

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानप्रसारं ज्ञानेन्द्रं,
ज्ञानाकारं ज्ञान प्रबोधं ज्ञातत्वम् ।
एकं नित्यं विश्वाराध्यं हृदिवेशं,
वन्दे मौनिं शैवयतीन्द्रं भगवन्तम् ॥३॥

कालातीतं कालकरालं कलिनाशं,
कश्मीरस्थं कामकुठारं काशीशम् ।
ब्रह्मानन्दं ब्रह्मस्वरूपं ब्रह्मर्षिं,
वन्दे मौनिं योगारूढं गुरुमूर्तिम् ॥

एकं पूर्णं निर्मलहृदयमद्वैतम्,
मायातीतं मोक्षोपायं परिव्राजम् ।
विष्णुं चक्रं परमाराध्य परमेशम्,
वन्दे मौनिं शिष्याराध्यं यतिपादम् ॥



ॐ

श्रीगणेशाय नमः

ॐ नमः श्रीशारदाविजयतेतराम् ॐ गुरवे नमः

अथ श्रीशारदासहस्रनामस्तोत्रम्

भैरवी उवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वलोकनमस्कृतः ।
सर्वागमैक तत्वज्ञ तत्वसागर पारग ॥
कृपापरोऽसि देवेश शरणागत वत्सल ।
पुरामह्यं वरो दत्तो देवदानव संगरे ॥
तमद्य भगवन्त्वत्तो याचेऽहं परमेश्वर ।
प्रयच्छ त्वरितं शम्भो यद्यहं प्रेयसीतव ॥

भैरव उवाच

देव देवि पुरासत्यं सुरासुर रणेजिरे ।
वरो दत्तो मया तेऽद्य वरं याचस्ववाञ्छितम् ॥

भैरवी उवाच

भगवन् या महादेवी शारदाख्या सरस्वती ।
काश्मीरस्यां स्वतपसा शाण्डिल्येनावतारिता ॥

कालातीतं कालकरालं कलिनाशं,
कश्मीरस्थं कामकुठारं काशीशम् ।
ब्रह्मानन्दं ब्रह्मस्वरूपं ब्रह्मर्षि,
वन्दे मौनिं योगारूढ़ गुरुमूर्तिम् ॥४॥

एकं पूर्णं निर्मलहृदयमद्वैतम्,
मायातीतं मोक्षोपायं परिव्राजम् ।
विष्णुं चक्रं परमाराध्य परमेशम्,
वन्दे मौनिं शिष्याराध्यं यतिपादम् ॥५॥



ॐ

श्रीगणेशाय नमः

ॐ नमः श्रीशारदाविजयतेतराम् ॐ गुरवे नमः

अथ श्रीशारदासहस्रनामस्तोत्रम्

भैरवी उवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वलोकनमस्कृतः ।
सर्वागमैक तत्वज्ञ तत्वसागर पारग ॥
कृपापरोऽसि देवेश शरणागत वत्सल ।
पुरामह्यं वरो दत्तो देवदानव संगरे ॥
तमद्य भगवन्त्वत्तो याचेऽहं परमेश्वर ।
प्रयच्छ त्वरितं शम्भो यद्यहं प्रेयसीतव ॥

भैरव उवाच

देव देवि पुरासत्यं सुरासुर रणेजिरे ।
वरो दत्तो मया तेऽद्य वरं याचस्ववाञ्छितम् ॥

भैरवी उवाच

भगवन् या महादेवी शारदाख्या सरस्वती ।
काश्मीरस्यां स्वतपसा शाण्डिल्येनावतारिता ॥

तस्या नाम सहस्त्रं मे भोगमोक्षैक साधनम् ।
साधकानां हितार्थाय वदत्वं परमेश्वर ॥

भैरव उवाच

रहस्यमेतदखिलं देवानां परमेश्वरि ।
परापर रहस्यं च जगतां भुवनेश्वरि ॥
या देवी शारदाख्येति जगन्माता सरस्वती ।
पञ्चाक्षरी च षट्कूट त्र्यैलोक्य प्रथिता सदा ।
तया ततमिदं विश्वं तया सम्पाल्यते जगत् ।
सेवस्वं हरते चान्ते सैवं मुक्तिप्रदायिनी ॥
देव देवी महाविद्या परतत्वैक रूपिणी ।
तस्यानाम सहस्त्रं ते वक्ष्येऽहं भक्तिसाधनम् ॥
त्रिवर्गं फलदं गोप्यं साधके च प्रदायकम् ।

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीशारदा भगवती सहस्त्रनाम मन्त्रस्य श्रीभगवान् भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, पञ्चाक्षरी शारदा भगवती देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नम इति कीलकं, त्रिवर्ग फल सिध्यर्थं श्रीशारदासहस्त्रनामपाठे विनियोगः ।

अथ करन्यास :

ह्राँ क्लाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं क्लूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्रैं क्लैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं क्लौं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ह्रः क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास:

ह्राँ क्लाँ हृदयायनमः ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा, ह्रूँ क्लूँ शिखायै वषट्, ह्रैं क्लैं कवचाय हुम्, ह्रौं क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः क्लः अस्त्राय फट्, ॐ भूर्भुव स्वरोमिति दिग्बन्धनम् ।

अथ ध्यानम्

शक्तिचाप शरघण्टिका सुधापात्र-
रत्नकलशोल्लसत्कराम् ।
पूर्णचन्द्रवदनां त्रिलोचनां-
शारदां नमत सर्वसिद्धिदाम् ॥

श्री श्रीशैलस्थिता या प्रहसितवदना पार्वती-शूलहस्ता । वह्निसूर्येन्दुनेत्रा त्रिभुवनजननी षड्भुजा सर्वशक्तिः । शाण्डिल्येनोपनीता जयति

भगवती भक्तिगम्या नतानाम् । सा नः सिंहासनस्था ह्यभिमतफलदा शारदा शं करोतु ।

लं इत्यादि पूजा

लं पृथिवी तत्त्वात्मिकायै श्रीशारदा देव्यै गन्धं लेपयामि, हं आकाश तत्त्वात्मिकायै ~~श्रीशारदा~~ श्रीशारदा देव्यै पुष्पं समर्पयामि, यं वायुतत्त्वात्मिकायै श्रीशारदादेव्यै धूपं आघ्रापयामि, रं वह्नि तत्त्वात्मिकायै श्रीशारदा देव्यै दीपं दर्शयामि, वं अमृत तत्त्वात्मिकायै श्रीशारदा देव्यै अमृत नैवेद्यं निवेदयामि सं सर्वतत्त्वात्मिकायै श्रीशारदा देव्यै ताम्बूलादि सर्वोपचारान्समर्पयामि ॥

मुद्रा :—योनिमुद्रां दर्शयेत् ।

श्रीशारदा गायत्री :—ॐ शारदायै विद्महे वरदायै धीमहि मोक्षदायिनी प्रचोदयात् ।

अथ ध्यानम् ।

शक्तिः शरचापघण्टिका सुधा—
पात्र रत्नकलशोल्लसत्कराम् ।

पूर्णचन्द्रवदनां त्रिलोचनां
शारदां नमतः सर्वसिद्धिदाम् ॥

मन्त्र :—ह्रीं क्लीं शारदा

—: श्रीशारदासहस्रनामस्तोत्रम् :—

ॐ ह्रीं क्लीं शारदा शान्ता श्रीमती श्रीशुभङ्करी
शुभा शान्ता शरद्बीजा श्यामिका श्यामकुन्तला ॥
शोभावती शशाङ्केशी शातकुम्भप्रकाशिनी ।
प्रताप्या तापिनी ताप्या शीतला शेषशायिनी ॥
श्यामा शान्तिकरी शान्तिः श्रीकरी वीरसूदिनी ।
वेश्या वेश्यकरी वैश्या वानरी वेपमान्विता ॥
वाचाली शुभगा शोभ्या शोभना शुचिस्मिता ।
जगन्माता जगद्धात्री जगत्पालनकारिणी ॥
हारिणी गर्दिनी गोधा गोमती जगदाश्रया ।
सौम्या याम्या तथा काम्या वाम्या वाचामगोचरा ॥
ऐंद्री चान्द्री कलाकान्ता शशिमण्डलमध्यगा ।
आग्नेयी वारुणी वाणी कारुणाकरुणाश्रया ॥
नैऋति नृतरूपा च वायवी वाग्भवोद्भवा ।
कौवेरी कूवरी कोला कामेशी कामसुन्दरी ॥

खेशानी केशनीकारा मोचनी धेनुकामुदा ।
कामधेनु कपलेशी कपालकरसंयुता ॥
चामुण्डा मूल्यदामूर्ति मुण्डमालाविभूषणा ।
सुमेरुतनया वन्द्या चण्डिका चण्डसूदिनी ॥
चण्डांसु तैजसीमूर्तिश्चण्डेशी चण्डविक्रमा ।
चाटुका चाटकी चर्ची चारुहंसा चमत्कृतिः ।१०।
ललज्जिह्वा सरोजाक्षी मुण्डस्रक् मुण्डधारिणी ।
सर्वानन्दमयी स्तुत्या सकलानन्दवर्धिनी ॥
धृतिः कृतिः स्थितिर्मूर्त्तिः द्यौवासा चारुहासिनी।
रुक्माङ्गदा रुक्मवर्णा रुक्मिणी रुक्मभूषणा ॥
कामदा मोक्षदानन्दा नारसिंही नृपात्मजा ।
नारायणी नरोत्तुङ्गा नागिनी नगनन्दिनी ॥
नागश्री गिरिजा गुह्या गुह्यकेशी गरीयसी ।
गुणाश्रया गुणातीता गजराजोपरिस्थिता ॥
गजाकारा गणेशानी गणगन्धर्वसेविता ।
दीर्घकेशी सुकेशी च पिंगला पिंगलालका ।१५।
भयदा भवमान्या च भवानी भवतोषिता ।
भवालस्या भद्रधात्री भीरुण्डा भगमालिनी ॥

पौरन्धरी परञ्ज्योतिः पुरन्धर समर्चिता ।
पीना कीर्तिकरी कीर्त्तिः केयूराढ्या महाकचा ॥
घोररूपा महेशानी कोमलाकोमलालका ।
कल्याणी कामना कुब्जा कनकाङ्गदभूषिता ॥
केनाशी बदाकाली महामेधा महोत्सवा ।
विरूपा विश्वरूपा च विश्वधात्री पिलंपिला ॥
पद्मावती महापुण्या पुण्यापुण्यजनेश्वरी ।
जह्नुकन्या मनोज्ञा च मानसी मनुपूजिता ॥२०॥
कामरूपा कामकला कमनीया कलावती ।
वैकुण्ठपत्नी कमला शिवपत्नी च पार्वती ॥
कार्मुसी गारुडीविद्या विश्वसू वीरूसू दितिः ।
माहेश्वरी वैष्णवी च ब्राह्मी ब्राह्मणपूजिता ॥
मान्या मानवती धन्या धनदा धनदेश्वरी ।
अपर्णा पर्णशिथिला पर्णशालापरम्परा ॥
पद्माक्षी नीलवस्त्रा च निम्नानीलपताकिनी ।
दयावती दयाधीरा धैर्यभूषण भूषिता ॥
जलेश्वरी मल्लहन्त्री भल्लहस्तामलापहा ।
कौमदी चैव कौमारी कुमारी कुमुदाकरा ॥२५॥

पद्मिनी पद्मनयना कुलजा कुलकौलिनी ।
कराला विकरालाक्षी विस्रंभा दुरदुराकृतिः ॥
वनदुर्गा सदाचारा सदाशान्ता सदाशिवा ।
सृष्टिः सृष्टिकरी साध्वी मानुषी देवकीद्युतिः ॥
वसुदा वासवी वेणुः वाराही चापराजिता ।
रोहिणी रमणारामा मोहिनी मधुराकृतिः ॥
शिवशक्तिः पराशक्तिः शाङ्करी टङ्कधारिणी ।
शङ्कावङ्कालमालाढ्या लङ्काकङ्कण भूषिता ॥
दैत्यापहरा दीप्ता दासोज्वलकुचाग्रणी ।
क्षान्ती क्षौमङ्करी बुद्धिः बोधाचारपरायणा ।३०।
श्रीविद्या भैरवीविद्या भारती भयघातिनी ।
भीमा भीमारवा भैमी भङ्गुरा क्षणभङ्गुरा ॥
जित्या पिनाक भृत्सैन्या शङ्खिनी शङ्खरूपिणी ।
देवाङ्गना देवमान्या दैत्यसूः दैत्यमर्दिनी ॥
देवकन्या च पौलोमी रतिः सुन्दरदोस्तटी ।
सुखिनी शौकिनी शौक्ली सर्वसौख्यविवर्धिनी ॥
लोलालीलावती सूक्ष्मा सूक्ष्मासूक्ष्मगतिर्मतिः ।
वरेण्या वरदा वेणी शरण्या शरचापिनी ॥

उग्रकाली महाकाली महाकालसमर्चिता ।
ज्ञानदा योगिध्येया च गोवल्ली योगवर्धिनी ।३५।
पेशला मधुरा माया विष्णुर्माया महोज्ज्वला ।
वाराणसी तथाऽवन्ती कान्ती कुरुक्षेत्रसुः ॥
अयोध्या योगसूत्राद्या यादवेशी यदुप्रिया ।
यमहन्त्री च यमदा यमिनी योगवर्तिरा ॥
भस्मोज्ज्वला भस्मशय्या भस्मकालीसमर्चिता ।
चंद्रिका शूलिनी शिल्या प्राशिनी चन्द्रवासिनी ॥
पद्महस्ता च पीना च पाशनी पाशमोचनी ।
सुधाकलशहस्ता च सुधामूर्ति सुधामयी ॥
व्यूहायुधा वरारोहा वरधात्री वरोत्तमा ।
पापाशना महामूर्ता मोहदा मधुरास्वरा ॥४०॥
मधुपा माधवी माल्या मल्लिका कालिकामृगी ।
मृगाक्षी मृगराजस्था केशिके नाशघातिनी ॥
रक्ताम्बरधरा रात्रिः सुकेशी सुरनायिका ।
सौरभी सुरभिः सूक्ष्मी स्वयम्भू कुसमार्चिता ॥
अम्बा जृम्भा जटाभूषा जूटिनी जटिनी नटी ।
मर्मानन्दजा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कामेष्ठवर्द्धिनी ॥

रौद्री रुद्रस्तना रुद्रा शतरुद्रा च शाम्भवी ।
श्रविष्टा शितिकण्ठेशी विमलानन्दवर्धिनी ॥
कपर्दिनी कल्पलता महाप्रलयकारिणी ।
महाकल्पान्तसंहृष्टा महाकल्पक्षयङ्करी ॥४५॥
सम्वर्ताग्निप्रभसेव्या सानन्दानन्दवर्धिनी ।
सुरसेना च मारेशी सुराक्षीववरोत्सुका ॥
प्राणेश्वरी पवित्रा च पावनी लोकपावनी ।
लोकधात्री महाशुक्ला शशिराचलकन्यका ॥
तमोघ्नीध्वान्तसंहत्री यशोदा च यशश्विनी ।
प्रद्योतनी च द्युमती धीमती लोकर्चचिता ॥
प्रणवेशी परगतिः पारावारसुतासमा ।
डाकिनी शाकिनी रुध्वा नीलानागाङ्गनानुतिः ॥
कुन्दद्युतिश्चकुरटा कांतिदा भ्रान्तिदा भ्रमा ।
चर्विता चर्विता गोष्टी गजाननसमर्चिता ॥५०॥
खगेश्वरी खनीला च नादिनी खगवाहिनी ।
चन्द्रानना महारुण्डा महोग्रा मीनकन्यका ॥
मानप्रदा महारूपा महामाहेश्वरीप्रिया ।
मरुद्गणा महद्वक्त्रा महोरगा भयानका ॥

महाघोणा करेशानी मार्जारी मन्मतोज्ज्वला ।
कर्त्री हन्त्री पालयत्री चण्डमुण्डनिशूदिनी ॥
निर्मला भास्वती भीमा भद्रिका भीमविक्रमा ।
गङ्गा चन्द्रावती दिव्या गोमती यमुनानदी ॥
विपाशा सरयूस्तापी वितस्ता कुङ्कुमार्चिता ।
गण्डकी नर्मदा गौरी चन्द्रभागा सरस्वती ।५५।
ऐरावती च कावेरी शतह्रवा शतह्रदा ।
श्वेतवाहनसेव्या च स्वेतस्या स्मितभाविनी ॥
कौशाम्बी कोशदा कोश्या काश्मीरकनकेलिनी ।
कोमला च विदेहा च पूः पुरी पुरसूदिनी ॥
पौरुरवा पलापाली पीवराङ्गी गुरुप्रिया ।
पुरारिः गृहिणी पूर्णा पूर्णरूपा रजस्वला ॥
सम्पूर्णचन्द्रवदना बालचन्द्रसमद्युतिः ।
रेवती प्रेयसी रेवा चित्राचित्राम्बराचमूः ॥
नवपुष्पसमुद्भुता नवपुष्पैकहारिणी ।
नवपुष्पससाम्रला नवपुष्पकुलावना ॥६०॥
नवपुष्पोद्भप्रीता नवपुष्पसमाश्रया ।
नवपुष्पललत्केशा नवपुष्पललत्मुखा ॥

नवपुष्पललत्कर्णा नवपुष्पललत्कटिः ।
नवपुष्पललन्नेत्रा नवपुष्पललन्नसा ॥
नवपुष्पसमाकारा नवपुष्पललद्भुजा ।
नवपुष्पललत्कण्ठा नवपुष्पार्चितस्तनी ॥
नवपुष्पललन्मध्या नवपुष्पकुलालका ।
नवपुष्पललन्नाभिः नवपुष्पललद्भगा ॥
नवपुष्पललत्पादा नवपुष्पकुलाङ्गिनी ।
नवपुष्पगुणोत्पीठा नवपुष्पोपशोभिता ॥६५॥
नवपुष्पप्रियाप्रेता प्रेतमण्डलमध्यगा ।
प्रेतासनाप्रेतगतिः प्रेतकुण्डलभूषिता ॥
प्रेतबाहुकरा प्रेतशय्याशयनशायिनी ।
कुलाचारा कुलेशानी कुलका कुलकौलिनी ॥
श्मशानभैरवी कालभैरवी शिवभैरवी ।
स्वयम्भू भैरवी विष्णुभैरवी सुरभैरवी ॥
कुमारभैरवी वालभैरवी रुरुभैरवी ।
शशाङ्कभैरवी सूर्यभैरवी वह्निभैरवी ॥
शोभादिभैरवी मायाभैरवी लोकभैरवी ।
महोग्रभैरवी साध्विभैरवी मृतभैरवी ॥७०॥

सम्मोहभैरवी शब्दभैरवी रसभैरवी ।
समस्त भैरवी देवीभैरवी मन्त्रभैरवा ॥
सुन्दराङ्गी मनोहन्त्री महाश्मशानसुन्दरी ।
सुरेशसुन्दरी देवसुन्दरी लोकसुन्दरी ॥
त्र्यैलोक्यसुन्दरी ब्रह्मसुन्दरी विष्णुसुन्दरी ।
गिरीशसुन्दरी कामसुन्दरी गुणसुन्दरी ॥
आनन्दसुन्दरी वक्त्रसुन्दरी चन्द्रसुन्दरी ।
आदित्यसुन्दरी वीरसुन्दरी वह्निसुन्दरी ॥
पद्माक्षसुन्दरी पद्मसुन्दरी पुष्पसुन्दरी ।
गुणदासुन्दरी देवीसुन्दरी पुरसुन्दरी ॥७५॥
महेशसुन्दरी देवीमहात्रिपुरसुन्दरी ।
स्वयम्भूसुन्दरी देवीस्वयम्भूपुष्पसुन्दरी ॥
शुक्रैकसुन्दरी लिङ्गसुन्दरी भगसुन्दरी ।
विश्वेशसुन्दरी विद्यासुन्दरी कालसुन्दरी ॥
शुक्रेश्वरी महाशुक्रा शुक्रतर्पणतर्पिता ।
शुक्रोद्भवा शुक्ररसा शुक्रपूजनतोषिता ॥
शुक्रात्मिका शुक्रकरी शुक्रस्नेहा च शुक्रिणी ।
शुक्रसेव्या सुराशुक्रा शुक्रलिप्तमनोन्मना ॥

शुक्रहारा सदाशुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रजा ।
शुक्रसूः शुक्ररम्याङ्गी शुक्राशुक्रविवर्धिनी ॥८०॥
शुक्रोत्तमा शुक्रपूजा शुक्रेशी शुक्रवल्लभा ।
ज्ञानेश्वरी भगोत्तुङ्गा भगमालाविहारिणी ॥
भगलिङ्गैकरसिका लिङ्गिनी भगमालिनी ।
वैंदवेशी भगाकारा भगलिङ्गादिशुक्रसूः ॥
वात्याली वनिता वात्यारूपिणी मेघमालिनी ।
गुणाश्रय गुणवती गुणगौरवसुन्दरी ॥
पुष्पतारा महापुष्पा पुष्टि परमलघुजा ।
स्वयम्भू पुष्पसंकाशा स्वयम्भूपुष्पपूजिता ॥
स्वयम्भूकुसुमन्यासा स्वयम्भूकुसुमार्चिता ।
स्वयम्भूपुष्पसरसी स्वयम्भूपुष्पपुष्पिणी ॥८५॥
शुक्रप्रिया शुक्रता शुक्रमज्जनतत्परा ।
अपानाप्राणरूपा च व्यानोदानस्वरूपिणी ॥
प्राणदा मदिरामोदा मधुमत्ता मदोद्धता ।
सर्वाश्रया सर्वगुणा अवस्था सर्वतोमुखी ॥
नारीपुष्पसमप्राणा नारीपुष्पसमत्सुका ।
नारीपुष्पलतानारी नारीपुष्पसजार्चिता ॥

षड्गुणा षड्गुणातीता षोडशीशशिनाकला ।
चतुर्भुजा दशभुजा चाष्टादशभुजास्तथा ॥
द्विभुजा चैकषट्कोणा त्रिकोणनिलयाश्रया ।
स्रोतस्वती महादेवी महारौद्री दुरान्तका ।९०।
दीर्घनासा सुनासा च दीर्घजिह्वा च मौलिनी ।
सर्वाधारा सर्वमयी सारसी सरलाश्रया ॥
सहस्रनयनाप्राणा सहस्राक्षसमर्चिता ।
सहस्रशीर्षा सुभटा शुभाक्षा दक्षपुत्रिणी ॥
षष्टिका षष्टिचक्रस्था षट्वर्गफलदायिनी ।
अदितिर्दितिरात्मा श्रीराद्या चाङ्कभचक्रिणी ॥
भरणी भगबिम्बाक्षी कृत्तिका चेक्ष्वसादिता ।
द्वनश्रीः रोहिणी चेष्टिः चेष्टामृगशिरोधरा ॥
ईश्वरी वाग्भवी चान्द्री पौलोमी मुनिसेविता ।
उमा पुनर्जाया जारा चोष्मरुंधा पुनर्वसुः ।९५।
चारुस्तुत्या तिमिस्थान्ती जाडिनी लिप्तदेंहिनी ।
लिढ्या श्लेश्मतरा श्लिष्टा मघवार्चितपादुका ॥
मघामोघा तथैणाक्षी ऐश्वर्यपददायिनी ।
ऐंकारी चन्द्रमुकुटा पूर्वाफाल्गुणिकेश्वरी ॥

उत्तराफल्गुहस्ता च हस्तिसेव्यासमेक्षणा ।
ओजस्विनी तथोत्साहा चित्रिणी चित्रभूषणा ॥
अम्भोजनयना स्वातिः विशाखा जननीशिखा ।
अकारनिलयाधारा नरसेव्या च ज्येष्टदा ॥
मूलापूर्वादिशाठेशी चोत्तराषाढ्यावनी तु ।
श्रवणा धर्मिणी धर्म्या धनिष्टा च शतभिषक् १००
पूर्वाभाद्रपदस्थानाप्यातुरा भद्रपादिनी ।
रेवतीरमणास्तुत्या नक्षत्रेशसमर्चिता ॥
कन्दर्पदर्पिणी दुर्गा कुरुकुल्लकपोलिनी ।
केतकीकुसुमस्निग्धा केतकीकृतभूषणा ॥
कालिकाकालरात्रिश्च कुटुम्भजनतर्पिता ।
कञ्जपत्राक्षिणी कल्यारोपिणी कालतोषिता ॥
कर्पूरपूर्णवदना कचभारनतानना ।
कलानाथकलामौली कलाकलिमलापहा ॥
कादम्बिनीकरिगतिः करिचक्रसमर्चिता ।
कञ्जेश्वरी कृपारूपा करूणामृतवर्षिणी ॥१०५॥
खर्वा खद्योतरूपा च खेटेशी खड्गधारिणी ।
खद्योतचञ्चलाकेशी खेचरी खेचरार्चिता ॥

गदाधारी मायागुर्वी गुरुपुत्री गुरुप्रिया ।
गीतावाद्यप्रियागाथा गजवक्त्रप्रसूगतिः ॥
गरिष्ठगणपूज्या च गूढगुल्फा गजेश्वरी ।
गजमान्या गणेशानी गाणपत्यफलप्रदा ॥
घर्मांशुनयना घर्म्या घोराघुर्घरनादिनी ।
घटस्तनी घटाकारा घुसृणकुल्लितस्तनी ॥
घोरारवा घोरमुखी घोरदैत्यनिर्बर्हिणी ।
घनछाया घनद्युतिः घनवाहनपूजिता ॥११०॥
टवकादेशरूपा च चतुराचतुरस्तनी ।
चतुराननपूज्या च चतुर्भुजसमर्चिता ॥
चर्माम्बराचरगतिः चतुर्वेदमयीचला ।
चतुसमुद्रशयना चतुर्दशसुरार्चिता ॥
चकोरनयना चम्पा चम्पकाकुलकुन्तला ।
च्युताचीराम्बरा चारुमूर्ति श्चम्पकमालिनी ॥
छाया छद्मकरी छिल्ली छोटिकाछिन्नमस्तका ।
छिन्नशीर्षा – छिन्ननासाछिन्नवस्त्रवरूथिनी ॥
छन्दिपत्रा छन्नछल्का छात्रमन्त्रानुग्राहिणी ।
छद्मिनी छद्मनिरता छद्मसद्मनवासिनी ।११५।

छायासुतहरा हव्या छलरूपा समुज्ज्वला ।
जया च विजया जेथा जयमण्डलमण्डिता ॥
जयनाथप्रिया जप्या जयदा जयवर्धिनी ।
ज्वालमुखी महाज्वाला जगत्त्राणपरायणा ॥
जगद्धात्री जगद्धत्री जगतामुपकारिणा ।
जालन्धरी जयन्ती च जम्बारारिवरप्रदा ॥
झिल्ली झाङ्कारमुखरा झरीझङ्कारिता तथा ।
ञनरूपा महाञमी ञहस्ता ञिवलोचना ॥
टङ्कारकारिणी टीका टिकाटङ्कायुधप्रिया ।
ठुकुराङ्गी ठलाश्रया ठकारत्रयभूषणा ॥१२०॥
डामरी डमरूप्रान्ता डमरूप्रहितोन्मुखी ।
ढिली ढकारवा चाटा ढभूषा भूषितानना ॥
णान्ता णवर्णसम्युक्ता णेयाणेयविनाशिनी ।
तुलात्र्यक्षा त्रिनयना त्रिनेत्रवरदायिनी ॥
तारतारवयातुल्या तारवर्णसमन्विता ।
उग्रतारा महातारा तोतुलातुलविक्रमा ॥
त्रिपुरात्रिपुरेशानी त्रिपुरान्तकरोहिणी ।
तन्त्रैकनिलया त्र्यक्षा तुषारांशुकलाधरा ॥

तपः प्रभावदा तृषा तपसातापहारिणी ।
तुषारपूर्णास्या तुहिनाद्रिसुतातुषा ॥१२५॥
तालायुधा तार्क्षवेगा त्रिकूटा त्रिपुरेश्वरी ।
थकारकण्ठनिलया थाल्ली थल्ली थवर्णजा ॥
दयात्मिका दीनरवा दुःखदारिद्रनाशिनी ।
देवेशी देवजननी दशविद्यादयाश्रया ॥
द्युननी दैत्यसंहर्त्री दौर्भाग्यपदनाशिनी ।
दक्षिणकालिका दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥
दानवादानवेन्द्राणी दान्तादम्भविवर्जिता ।
दधीचवरदा दुष्टदैत्यदर्पापहारिणी ॥
दीर्घनेत्रा दीर्घकचा दुष्टारपदसंस्थिता ।
धर्मध्वजा धर्ममयी मर्धराजवरप्रदा ॥१३०॥
धनेश्वरी धनिस्तुत्या धनाध्यक्षा धनात्मिका ।
धीः ध्वनिः धवलाकारा धवलाम्भोजधारिणी ॥
धीरसूः धारिणी धात्री पूः पुनी च पुनीस्तुषा ।
नवीना नूतना नव्या नलिनायतलोचना ॥

नरनारायणस्तुत्या नागहारविभूषणा ।
नवेन्दुसन्निभा नाम्ना नागकेसरमालिनी ॥
नृवन्द्या नगरेशानी नायिकानायकेश्वरी ।
निरक्षरा निरालम्बा निर्लोभा निरयोनिजा ॥
नन्दजा नगदर्पाढ्या निकन्दा नरमुण्डिनी ।
निन्दा नन्दफलानष्टा नन्दकर्मपरायणा ॥
नरनारीगुणाप्रीता नरमालाविभूषणा ।
पुष्पायुधा पुष्पमाला पुष्पबाणा प्रियंवदा ॥
पुष्पबाणप्रियंकरी पुष्पधामविभूषिता ।
पुण्यदा पूर्णिमा पूता पुण्यकोटिफलप्रदा ॥
पुराणागममन्त्राढ्या पुराणपुरुषाकृतिः ।
पुराणगोचरापूर्वा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥
परापररहस्याङ्गा प्रह्लादपरमेश्वरी ।
फाल्गुणी फाल्गुणप्रीता फणिराजसमर्चिता ॥
फणप्रदा च फणेशी फणाकारा फणोत्तमा ।
फणिहारा फणिगतिःफणिकाञ्ची फलाशना ।१४०
बलदा बाल्यरूपा च बालराक्षर मंत्रिता ।
ब्रह्मज्ञानमयी ब्रह्मवाञ्छा ब्रह्मपदप्रदा ॥

ब्रह्माणी बृहतिः ब्रीडा ब्रह्मावर्तप्रवर्तनी ।
ब्रह्मरूपा पराव्रज्या ब्रह्ममुण्डैकमालिनी ॥
बिन्दुभूषा बिन्दुमाता बिम्बोष्टी बगुलामुखी ।
ब्रह्मस्त्रविद्या ब्रह्माणी ब्रह्माच्युतनमस्कृत ॥
भद्रकाली सदाभद्री भीमेशी भुवनेश्वरी ।
भैरवाकारकल्लोला भैरवी भैरवार्चिता ॥
भानवी भासुदाम्भोजा भासुदास्यभयार्तिहा ।
भीडा भागीरथी भद्रासुभद्रा भद्रवर्धिनी ॥
महामाया महाशान्ता मातङ्गी मीनतर्पिता ।
मोदकाहार संतुस्त्या मालिनी मानवर्धिनी ॥
मनोज्ञा चष्कुलीकर्णा मायिनी मधुराक्षरा ।
मायाबीजवती मानी मारीभयनिसूदिनी ॥
माधवी मन्दगा माध्वी मदिरारुणलोचना ।
महोत्साहा गणोपेता माननीया महर्षिभिः ॥
मत्तमातङ्गा गोमत्ता मन्मथारिवरप्रदा ।
मयूरकेतुजननी मन्त्रराजविभूषिता ॥
यक्षिणी योगिनी योग्या याज्ञकी योगवल्ला ।
यशोवती यशोधात्री यक्षभूतदयापरा ॥१५०॥

यमस्वसा यमघ्नी च यजमानवरप्रदा ।
रात्री रात्रञ्चरघ्नी च राक्षसी रसिकारसा ॥
रजोवती रतिः शान्ति राजमातङ्गिनीपरा ।
राजराजेश्वरी राज्ञी रसस्वाद विचक्षणा ॥
ललनानूतनाकारा लक्ष्मीनाथसमर्चिता ।
लक्ष्मी च सिद्धलक्ष्मी च महालक्ष्मीललद्रसा ॥
लवङ्गकुसुमप्रीता लवङ्गफलतोषिता ।
लाक्षारुणा ललत्या च लाङ्गूलिवरप्रदायिनी ॥
वातात्मजप्रिया वीर्या वरदावानरीश्वरी ।
विज्ञानकारिणी वेण्या वरदा वरदेश्वरी ॥
विद्यावती वैद्यमाता विद्याहारविभूषणा ।
विष्णुवक्षस्थलस्था च वामदेवाङ्गवासिनी ॥
वामाचारप्रिया वल्ली विवस्वत्सोमदायिनी ।
शारदा शरदम्भोज वारिणी शूलधारिणी ॥
शशाङ्कमुकुटा शष्पा शेषशायिनमस्कृता ।
श्यामा श्यामाम्वरा श्याममुखी श्रीपतिसेविता ॥
षोडशी षड्रसा षड्जा षडाननप्रियङ्करी ।
षडङ्घ्रिकूजिता षष्टिः षोडशाम्बरभूषिता ॥

षोडशाराब्जनिलया षोडशी शोडशाक्षरी ।
सौं वीजमण्डिता सर्वा सर्वंगा सर्वरूपिणी ॥
समस्तनरकस्त्राता समस्तदुरितापहा ।
सम्पत्करी महासम्पत्सर्वदासर्वतोमुखी ॥
सूक्ष्माकरी सती सीता समस्तभुवनाश्रया ।
सर्वसंस्कारसम्पतिः सर्वसंस्कारवासना ॥
हरिप्रिया हरिस्तुत्या हरिवाहा हरीश्वरी ।
हलाप्रिया हलिमुखी हाटकेशी हृदेश्वरी ॥
ह्रीं बीजवर्णमुकुटा ह्रीः हरप्रियकारिणी ।
क्षामा क्षान्ता च क्षोणी च क्षत्रियीमन्त्ररूपिणी ।
पञ्चात्मिका पञ्चवर्णा पञ्चतिग्मसुभेदिनी ।
मुक्तिदा मुनिवनेशी शाण्डिल्य वरदायिनी ॥
ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं च पञ्चार्ण देवता श्रीसरस्वती ।
ॐ सौः ह्रीं श्रीं शरद्बीजशीर्षा नीलसरस्वती ॥
ॐ ह्रीं क्लीं सः नमो ह्रीं ह्रीं स्वाहा बीजा च शारदा ॥

—: ॐ नम इति :—

अथ फलश्रुतिः

शारदानामसाहस्त्रं मन्त्रं श्री भैरवोदितम् ।
गुह्यं मन्त्रात्मकं पुण्यं सर्वस्वं त्रिदिवौकसाम् ॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि श्रृणुयात् श्रावयेदपि ।
दिवारात्रौ च सन्ध्यायां प्रभाते च सदापुमान् ॥
गोगजाश्वरथैः पुण्यं गेहं तस्य भविष्यति ।
दासीदासजनैः पूर्णं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ॥
श्रेयस्करं सदा देवि साधकानां यशस्करम् ।
पठेन्नामसहस्त्रं तु निशीथे साधकोत्तमः ॥
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःखनिवारणम् ।
पापरोगादि दुष्टानां सञ्जीव निर्मलंपरम् ॥
यः पठेत्भक्तियुक्तस्तु मुक्तकेशोदिगम्बर ।
सर्वागमे सः पूज्यः स्यात्स विष्णुः समहेश्वर ॥
बृस्पतिसमोवाचो नीत्या शङ्कर सन्निभः ।
गत्या पवनसंकाशो मत्या शुक्रसमोऽपि च ।
तेजसा दिव्य संकाशो रूपेण मकरध्वजः ॥

ज्ञानेन च शुक्रो देवि चायुषा भृगुनन्दनः ।
साक्षात्सः परमेशानी प्रभुत्वेन सुराधिपः ॥
विद्याधिषणया कीर्त्या रामो रामो बलेन च ।
स दीर्घायुः सुखी पुत्री विजयी विभवी विभुः ॥
नान्य चिन्ता प्रकतव्या नान्यचिन्ता कदाचना ।१०
वातस्तम्भं जलस्तम्भं चौरस्तम्भं महेश्वरी ।
वह्निशैत्यं करोत्येव पठनं चास्य सुन्दरि ॥
स्तम्भयेदपि ब्रह्माणं मोहयेदपि शङ्करम् ।
वश्ययेदपि राजानं शमयेद्धव्यवाहनम् ॥
आकर्षयेद्देवकन्या उच्चाटयति वैरिणम् ।
मारयेदपकीर्ति स वशयेच्च चतुर्भुजम् ॥
किं किं न साधयत्येवं मन्त्रनामसहस्रकम् ।
शरत्काले निशीथे च भौमे शक्तिः समन्वित ॥
पठेन्नाम सहस्रं च साधकः किं न साधयेत् ।
अष्टम्यामाश्वमासे तु मध्याह्ने मूर्तिसन्निधौ ॥
पठेन्नाम सहस्रं तु मुक्तकेशो दिगम्बरः ।
सुदर्शनो भवेदाशु साधकः पर्वतात्मजे ॥

अष्टम्यां सर्वरात्रं तु कुंकुमेन च चन्दनैः ।
रक्तचन्दन युक्तेन कस्तूर्या चापि पावकैः ॥
मृगनाभि मनः शिल्का कल्कयुक्तेन वारिण ।
लिखेद्भूजे जपेन्मन्त्रं साधको भक्तिपूर्वकम् ॥
धारयेन्मूर्ध्नि वा बाह्वौ योषिद् वामकरे शिवे ।
रणे रिपून्विजित्यासु मातङ्गानिव केशरी ॥
स्वगृहं क्षणमायाति कल्याणी साधकोत्तमः ।
वन्ध्या वामभुजे धृत्वा चतुर्थेऽहनिपार्वति ॥
अमायां रविवारे यः पठेत्पेतालये तथा ।
त्रिवारं साधको देवि भवत्सुत कवीश्वरः ॥
सक्रान्तौ ग्रहणे वापि पठेन्मत्रं नदीतटे ।
स भवेत्सर्वशास्त्रज्ञो वेदवेदाङ्गतत्वबित् ॥
शारदाया इदंनाम्नां सहस्रं मन्त्रगर्भकम् ।
गोप्यं गुह्यं सदागोप्यं सर्वधर्मैकसाधनम् ॥
मन्त्र कोटिमयं दिव्यं तेजोरूपं परात्परम् ।
अष्टम्यां च नवम्यां च चतुर्दश्यां दिनेदिने ॥
संक्रन्तौ मङ्गले रात्र्यां यो अर्चयेच्छारदा सुधीः ।
त्रयस्त्रिंशत्सु कोटीनां देवानां तु महेश्वरी ॥

ईश्वरि शारदा तस्य मातेवहितकारिणी ।
यो जपेत्पठते नाम्नां सहस्रं मनसा शिवे ॥
स भवेच्छारदा पुत्रः साक्षात्भैरवसन्निभ ।
इदं नाम्नां सहस्रं तु कथितं हितकाम्यया ॥
अस्या प्रभावमतुलं जन्म जन्मान्तरेष्वपि ।
न शक्यते मयाऽख्यातुं कोटिशो वदनैरपि ॥
अदातव्यमिदं देवी दुष्टानामतिभाषिणाम् ।
अकुलीनाय दुष्टाय दीक्षाहीनाय सुन्दरी ॥
अवक्तव्यं अश्रोतव्यमिदं नामसहस्रकम् ।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो न दातव्यं कदाचन ।३०।
शान्ताय गुरुभक्ताय कुलीनाय महेश्वरि ।
स्वशिष्याय प्रदातव्यमित्याज्ञा परमेश्वरि ॥
इदं रहस्यं परमं देवि भक्त्या मयोदितम् ।
गोप्यं रहस्यं च गोप्तव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे पार्वतीपरमेश्वर
संवादे श्रीशारदासहस्रनाम स्तवराज
संपूर्णम् ।

—: श्रीशारदाविजयतेतराम् :—

ॐ गोधायै नमः
गोमत्यै
जगदाश्रयायै
सौम्यायै
याम्यायै
काम्यायै ४०
वाम्यायै
वाचामगोचरायै
ऐन्द्रयै
चान्द्रयै
कलाकान्तायै
शशिमण्डलमध्यगायै
आग्नेय्यै
वारुण्यै
वाण्यै
करुणाकरुणाश्रयायै ५०
नैनृत्यै
नृतरुपायै
वायव्यै
वाग्भवोद्भवायै

ॐ कौवेर्यै नमः
कूवर्यै
कोलायै
कामेश्यै
कामसुन्दर्यै
खेशान्यै ६०
केशिनीकारामोचन्यै
धेनुकामुदायै
कामधेनवे
कपालेश्यै
कपालकरसंयतायै
चामुण्डायै
मूल्यदामूर्त्यै
मुण्डमालाविभूषणायै
सुमेरुतनयायै
वन्द्यायै ७०
चण्डिकायै
चण्डसूदिन्यै
चण्डांसुतैजसीमूर्त्यै
चण्डेश्यै

ॐ चण्डविक्रमायै नमः
चाटुकायै नमः
चाटक्यै
चर्च्यै
चारुहंसायै
चमत्कृत्यै ८०
ललज्जिह्वायै
सरोजाक्ष्यै
मुण्डस्रजे
मुण्डधारिण्यै
सर्वानन्दमय्यै
स्तुत्यायै
सकलानन्दवर्धिन्यै
धृत्यै
कृत्यै
स्थितिमूर्त्यै ९०
द्यौवासायै
चारुहंसिन्यै
रुक्माङ्गदायै
रुक्मवर्णायै

ॐ रुक्मिण्यै नमः
रुक्मभूषणायै
कामदायै
मोक्षदायै
नन्दायै
नारसिंह्यै १००
नृपात्मजायै नमः
नारायण्यै
नरोत्तुङ्गायै
नागिन्यै
नगनन्दिन्यै
नागश्रियै
गिरिजायै
गुह्यायै
गुह्यकेश्यै
गरीयस्यै ११०
गुणाश्रयायै
गुणातीतायै
गजराजोपरिस्थितायै
गजाकारायै

ॐ गणेशान्यै नमः
गणगन्धर्वसेवितायै
दीर्घकेश्यै
सुकेश्यै
पिंगलायै
पिंगलालकायै १२०
भयदायै
भवमान्यायै
भवान्यै
भवतोषितायै
भवालस्यायै
भद्रधात्र्यै
भीरुण्डायै
भगमालिन्यै
पौरन्धर्यै
परञ्ज्योत्यै १३०
पुरन्धरसमर्चितायै
पिनाकीर्तिकर्यै
कीर्त्यै
केयूराढ्यामहाकचायै

ॐ घोररूपायै नमः
महेशान्यै
कोमलाकोमलालकायै
कल्याण्यै
कामनाकुब्जायै
कनकाङ्गदभूषितायै १४०
केनाश्यै
वरदाकाल्यै
महामेधायै
महोत्सवायैं
विरुपायै
विश्वरूपायै
विश्वधात्र्यै
पिलंपिलायै
पद्मालयै
महापद्मालयै १५०
पुण्यापण्यजनेश्वर्यै
जह्नुकन्यायै
मनोज्ञायै
मानस्यै

ॐ मनुपूजितायै नमः
कामरुपायै
कामकलायै
कमनीयायै
कलावत्यै
वैकुण्ठपत्न्यै १६०
कमलायै
शिवपत्यै
पार्वत्यै
काम्यस्यै
गारुडीविद्यायै
विश्वसुवे
वीरसुवे
दित्यै
माहेश्वर्यै
वैष्णव्यै १७०
ब्राह्म्यै
ब्राह्मणपूजितायै
मान्यायै
मानवत्यै

ॐ धन्यायै नमः
धनदायै
धनदेश्वर्यै
अपर्णायै
पर्णमिथिलायै
पर्णशालपरम्परायै १८०
पद्माक्ष्यै
नीलवस्त्रायै
निम्नानीलयताकिन्यै
दयावत्यै
दयाधीरायै
धैर्यभूषणभूषितायै
जलेश्वर्यै
भल्लहन्त्र्यै
भल्लहस्तमलापहायै
कौमुद्यै १९०
कौमार्यै
कुमारीकुमुदाकरायै
पद्मिन्यै
पद्मनयनायै

ॐ कुलजायै	नमः	ॐ रोहिण्यै	नमः
कुलकौलिकायै		रमणारामायै	
करालायै		मोहिन्यै	
विकरालक्ष्यै		मधुराकृत्यै	
विस्रम्भायै		शिवशक्त्यै	
दुरदुराकृत्यै	२००	महाशक्त्यै	२२०
वनदुर्गायै		शाङ्कर्यै	
सदाचारायै		टङ्कधारिण्यै	
सदाशान्तायै		शङ्कावङ्कालमालाढ्यै	
सदाशिवायै		लङ्काकङ्कणभूषितायै	
सृष्टयै		दैत्यापहरादीप्तायै	
सृष्टकर्यै		दासोज्वलकुचाग्रिण्यै	
साध्व्यै		क्षान्त्यै	
मानुष्यै		क्षोमङ्कर्यै	
देवकीद्युत्यै		बुद्ध्यै	
वसुदायै	२१०	बौधाचारपरायणायै	२३०
वासव्यै		श्रीविद्यायै	
वेणवे		भैरवीविद्यायै	
वाराह्यै		भारत्यै	
अपराजितायै		भयघातिन्यै	

ॐ भीमायै नमः
भीमारवायै
भैम्यै
भङ्गुरायै
क्षणभंगुरायै
जित्यायै २४०
पिनाकभृत्सैन्यायै
शङ्खिन्यै
शङ्खधारिण्यै
देवाङ्गनायै
देवमान्यायै
दैत्यसुवे
दैत्यमर्दिन्यै
देवकन्यायै
पौलोम्यै
रतिसुन्दरदोस्तव्यै २५०
सुखिन्यै
शौकिन्यै
शौक्ल्यै
सर्वसौख्यविवर्धिन्यै

ॐ लोलालीलावत्यै नमः
सूक्ष्मायै
सूक्ष्मासूक्ष्मगतिर्मत्यै
वरेण्यायै
वरदायै
वेण्यै २६०
शरण्यायै
शरचापिन्यै
उग्रकाल्यै
महाकाल्यै
महाकालसमर्चितायै
ज्ञानदायै
योगिध्येयायै
गोवल्यै
योगवर्धिन्यै
पेशलायै २७०
मधुरायै
मायायै
विष्णुमायायै
महोज्ज्वलायै

ॐ वाराणस्यै नमः
अवन्त्यै
कान्त्यै
कुक्कुरक्षेत्रसुवे
अयोध्यायै
योगसूत्राढ्यायै २८०
यादवेश्यै
यदुप्रियायै
यमहन्त्र्यै
यमदायै
यामिन्यै
योगवर्तिरायै
भस्मोज्ज्वलायै
भस्मशय्यायै
भस्मकाल्यै
चिताचितायै २९०
चन्द्रिकायै
शूलिन्यै
शिल्यायै
प्राशिन्यै

ॐ चन्द्रवासिन्यै नमः
(चन्द्रवासितायै)
पद्महस्तायै
पीनायै
पाशिन्यै
पाशमोचन्यै
सुधाकलशहस्तायै ३००
सुधामूर्त्यै
सुधामय्यै
व्यूहायुधायै
वरारोहायै
वरदात्र्यै
वरोत्तमायै
पापाशनायै
महमूर्तायै
मोहदायै
मधुराम्बरायै ३१०
मधुपायै
माधव्यै
माल्यायै

ॐ मल्लिकायै नमः

कालिकामृग्यै

मृगाक्ष्यै

मृगाराजस्थायै

केशिकी नाश घातिन्यै

रक्ताम्बरधरायै

रात्र्यै ३२०

सुकेश्यै

सुरनायिकायै

सौरभ्यै

सुरभ्यै

सूक्ष्मायै

स्वयम्भुवे

कुसुमार्चितायै

अम्बायै

जृम्भायै

जटाभूषा ३३०

जूटिन्यै

जटिन्यै

नटयै

ॐ मर्मानन्दजायै नमः

ज्येष्ठायै

श्रेष्ठायै

कामेष्ठवर्धिन्यै

रौद्रयै

रुद्रस्तनायै

रुद्रायै ३४०

शतरुद्रायै

शाम्भव्यै

श्रविष्ठायै

शितिकण्ठेश्यै

विमलानन्दवर्धिन्यै

कपर्दिन्यै

कल्पलतायै

महाप्रलयकारिण्यै

महाकल्पान्तसंहृष्टायै

महाकल्पक्षयङ्कर्यै ३५०

संवर्ताग्निप्रभासेव्यायै

सानन्दानन्दवर्धिन्यै

सुरसेनायै

ॐ मारेश्यै नमः
सुराक्षीववरोत्सुकायै
प्राणेश्वर्यै
पवित्रायै
पावन्यै
लोकपावन्यै
लोकधात्र्यै ३६०
महाशुक्लायै
शिशिराचलकन्यकायै
तमोग्नीध्वान्तसंहर्त्र्यै
यशोदायै
यशश्विन्यै
प्रद्योतन्यै
द्युतिमत्यै
धीमत्यै
लोकचर्चितायै
प्रणवेश्यै ३७०
परगत्यै
पारावारसुतासमायै
डाकिन्यै

ॐ शाकिन्यै नमः
रुद्रायै
नीलानागाङ्गनानुत्यै
कुन्दद्युत्यै
कुरटायै
कान्तिदायै
भ्रान्तिदायै ३८०
भ्रमायै
चर्वितायै
चर्वितागोष्ठयै
गजाननसमर्चितायै
खगेश्वर्यै
खनीलायै
नादिन्यै
खगवाहिन्यै
चन्द्राननायै
महारुण्डायै ३९०
महोग्रायै
मीनकन्यकायै
मानप्रदायै

ॐ महारूपायै नमः	ॐ दिव्यायै नमः
महामाहेश्वरीप्रियायै	गोमत्यै
मरूद्गणायै	यमुनानद्यै
महद्वक्त्रायै	विपाशायै
महोरगभयानकायै	सरयुवे
महाघोणायै	ताप्यै
करेशायै ४००	वितस्तायै ४२०
मार्जायै	कुङ्कुमार्चितायै
मन्मथोज्ज्वलायै	गण्डक्यै
कर्त्र्यै	नर्मदायै
हन्त्र्यै	गौर्यै
पालयित्र्यै	चन्द्रभागाय
चण्डमुण्डनिशूदिन्यै	सरस्वत्यै
निर्मलायै	ऐरावत्यै
भास्वत्यै	कावेर्यै
भीमायै	शतह्लवायै
भद्रिकायै ४१०	शतहृदायै ४३०
भीमविक्रमायै	श्वेतवाहनसेव्यायै
गङ्गायै	श्वेतास्यायै
चन्द्रावत्यै	स्मितभाविन्यै

ॐ कौशाम्ब्यै नमः	ॐ चित्राचित्राम्बराचमवे नमः
कोशदायै	नवपुष्पसमद्भूतायै
कोश्यायै	नवपुष्पैकहारिण्यै
काश्मीरकतकेलिन्यै	नवपुष्पससाम्रालायै
कोमलायै	नवपुष्पकुलावनायै
विदेहायै	नवपुष्पोद्भवप्रीतायै
पूः पुर्यै ४४०	नवपुष्पसमाश्रयायै ४६०
पुरसूदिन्यै	नवपुष्पललत्केशायै
पौरुखायै	नवपुष्पललन्मुखायै
पलापाल्यै	नवपुष्पललत्कर्णायै
पीवराङ्ग्यै	नवपुष्पललत्कट्यै
गुरुप्रियायै	नवपुष्पललन्नेत्रायै
पुरारिगृहिण्यै	नवपुष्पललन्नासायै
पूर्णायै	नवपुष्पसमाकारायै
पूर्णरूपरजस्वलायै	नवपुष्पललद्भुजायै
सम्पूर्णचन्द्रवदनायै	नवपुष्पललत्कण्ठायै
बालचन्द्रसमद्युत्यै ४५०	नवपुष्पार्चितस्तन्यै ४७०
रेवत्यै	नवपुष्पललन्मध्यायै
प्रेयस्यै	नवपुष्पकुलालकायै
रेवायै	नवपुष्पललन्नाभ्यै

ॐ नवपुष्पललद्भगायै नमः
नवपुष्पललत्पादायै
नवपुष्पकुलाङ्गिन्यै
नवपुष्पगुणोत्पीडायै
नवपुष्पोपशोभितायै
नवपुष्पप्रियाप्रेतायै
प्रेतमण्डलमध्यगायै ४८०
प्रेतासनायै
प्रेतगत्यै
प्रेतकुण्डलभूषितायै
प्रेतबाहुकरायै
प्रेतशय्याशयनशायिन्यै
कुलाचारायै
कुलेशान्यै
कुलजायै (कुलकायै)
कुलकौलिन्यै
श्मशानभैरव्यै ४९०
कालभैरव्यै
शिवभैरव्यै
स्वयम्भूभैरव्यै
विष्णुभैरव्यै
ॐ सुरभैरव्यै नमः
कुमारभैरव्यै
बालभैरव्यै
रूरुभैरव्यै
शशाङ्कभैरव्यै
सूर्यभैरव्यै ५००
वह्निभैरव्यै
शोभादिभैरव्यै
मायाभैरव्यै
लोकभैरव्यै
महोग्रभैरव्यै
साध्वीभैरव्यै
मृतभैरव्यै
सम्मोहभैरव्यै
शब्दभैरव्यै
रसभैरव्यै ५१०
समस्तभैरव्यै
देवभैरव्यै
मन्त्रभैरव्यै
सुन्दराङ्ग्यै

ॐ मनोहन्त्र्यै नमः
महाश्मशानसुन्दर्यै
सुरेशसुन्दर्यै
देवसुन्दर्यै
लोकसुन्दर्यै
त्र्यैलोक्यसुन्दर्यै ५२०
ब्रह्मसुन्दर्यै
विष्णुसुन्दर्यै
गिरीशसुन्दर्यै
कामसुन्दर्यै
गुणसुन्दर्यै
आनन्दसुन्दर्यै
वक्त्रसुन्दर्यै
चन्द्रसुन्दर्यै
आदित्यसुन्दर्यै
वीरसुन्दर्यै ५३०
वह्निसुन्दर्यै
पद्माक्षसुन्दर्यै
पद्मसुन्दर्यै
पुष्पसुन्दर्यै

ॐ गुणदासुन्दर्यै नमः
देवीसुन्दर्यै
पुरसुन्दर्यै
महेशसुन्दर्यै
देवीमहात्रिपुरसुन्दर्यै
स्वयम्भूसुन्दर्यै ५४०
देवीस्वयम्भूपुष्पसुन्दर्यै
शुक्रैकसुन्दर्यै
लिङ्गसुन्दर्यै
भगसुन्दर्यै
विश्वेशसुन्दर्यै
विद्यासुन्दर्यै
कालसुन्दर्यै
शुक्रेश्वर्यै
महाशुक्रायै
शुक्रतर्पणतर्पितायै ५५०
शुक्रोद्भवायै
शुक्ररसायै
शुक्रपूजनतोषितायै
शुक्रात्मिकायै

ॐ शुक्रकर्यै नमः
शुक्रस्नेहायै
शुक्रिण्यै
शुक्रसेव्यायै
सुराशुक्रायै
शुक्रलिप्तायै ५६०
मनोन्मनायै
शुक्रहारायै
सदाशुक्रायै
शुक्ररुपायै
शुक्रजायै
शुक्रसुवे
शुक्ररम्यङ्गच्यै
शुक्राशुक्रविवर्धिन्यै
शुक्रोत्तमायै
शुक्रपूजायै ५७०
शुक्रेश्यै
शुक्रवल्लभायै
ज्ञानेश्वर्यै
भगोत्तुङ्गायै
भगमालाविहारिण्यै

ॐ भगलिङ्गैकरसिकायै नमः
लिङ्गिन्यै
भगमालिन्यै
वैन्दवेश्यै
भगाकारायै ५८०
भगलिङ्गादिशुक्रसुवे
वात्यालयै
विनतायै
वात्यारूपिण्यै
मेघमालिन्यै
गुणाश्रयायै
गुणवत्यै
गुणगौरवसुन्दर्यै
पुष्पतारायै
महापुष्पायै ५९०
पुष्ट्यै
परमलघुजायै
स्वयम्भूपुष्पसंकाशायै
स्वयम्भूपुष्पपूजितायै
स्वयम्भूकुसुमन्यासायै
स्वयम्भूकुसुमार्चितायै

ॐ स्वयम्भूपुष्पसरस्यै नमः
स्वयम्भूपुष्पपुष्पिण्यै
शुक्रप्रियायै
शुक्ररतायै ६००
शुक्रमज्जनतत्परायै
अपानाप्राणरुपायै
व्यानोदानस्वरूपिण्यै
प्राणदायै
मदिरामोदायै
मधुमत्तायै
मदोद्धतायै
सर्वाश्रयायै
सर्वगुणायै
अवस्थासर्वतोमुख्यै ६१०
नारीपुष्पसमप्राणायै
नारीपुष्पसमुत्सुकायै
नारीपुष्पलतानायै
नारीपुष्पस्रजार्चितायै
षड्गुणाषड्गुणातीतायै
षोड़शीशशिनकलायै

ॐ चतुर्भुजायै नमः
दशभुजायै
अष्टादशभुजायै
द्विभुजायै ६२०
एकषट्कोणायै
त्रिकोणनिलयाश्रयायै
स्रोतस्वत्यै
महादेव्यै
महारौद्रच्यै
दुरान्तकायै
दीर्घनासायै
सुनासायै
दीर्घजिह्वायै
मौलिन्यै ६३०
सर्वाधारायै
सर्वमय्यै
सारस्यै
सरलाश्रयायै
सहस्रनयनाप्राणायै
सहस्राक्षायै

ॐ सर्मार्चितायै नमः

सहस्रशीर्षायै

सुभटायै

सुभाक्षायै ६४०

दक्षपुत्रिण्यै

षष्टिकायै

षष्टिचक्रस्थायै

षड्वर्गफलदायिन्यै

आदित्यै

दितिरात्मने

श्रीराद्यायै

अङ्कामचक्रिण्यै

भरण्यै

भगबिम्बाक्ष्यै ६५०

कृत्तिकायै

इक्षवसादितायै

इनश्रियै

रोहिण्यै

चेष्टयै

चेष्टामृगशिरोधरायै

ॐ ईश्वर्यै नमः

वाग्भव्यै

चान्द्रयै

पौलोमिन्यै ६६०

मुनिसेवितायै

उमायै

पुनर्जायायै

जारायै

ऊष्मरुन्धायै

पुनर्वसुवे

चारुस्तुत्यायै

तिमिस्थान्त्यै

जाडिनीलिप्तदेहिन्यै

लीढयायै ६७०

मूलेश्मतरायै

श्लिष्टायै

मघवार्चितपादुक्यै

मघामोघायै

इणाक्ष्ये

ऐश्वर्यपददायिन्यै

ॐ ऐंकायै नमः
चन्द्रमुकुटायै
पूर्वाफाल्गुनिकेश्वर्यै
उत्तराफल्गुहस्तायै ६८०
हस्तिसेव्यासमेक्षणायै
ओजस्विन्यै
उत्साहायै
चित्रिण्यै
चित्रभूषणायै
अम्भोजनयनायै
स्वात्यै
विशाखायै
जननीशिखायै
अकारनिलयायै ६९०
नरसेव्यायै
ज्येष्ठदायै
मूलापूर्वादिषाढेश्यै
उत्तराषाढ्यावन्यै
श्रवणायै
धर्मिण्यै

ॐ धेमायै नमः
धनिष्ठायै
शतभिषजे
पूर्वाभाद्रपदस्थानायै ७००
आतुरायै
भद्रपादिन्यै
रेवतीरमणास्तत्मायै
नक्षत्रेशसमर्चितायै
कन्दर्पदर्पिण्यै
दुर्गायै
कुरुकुल्लाकपोलिन्यै
केतकीकुसुमस्निग्धायै
केतकीकृतभूषणायै
कालिकायै ७१०
कालरात्र्यै
कुटुम्बिजनतर्पितायै
कञ्जपत्राक्षिण्यै
कल्यारोपिण्यै
कालतोषितायै
कर्पूरपूर्णवदनायै

ॐ कचभारनताननायै नमः
कलानाथकलामाल्यै
कलायै
कलिमलापहायै ७२०
कादम्बिन्यै
करिगत्यै
करिचक्रसमर्चितायै
कञ्जेश्वर्यै
कृपारूपायै
करुणामृतवर्षिण्यै
खर्वायै
खद्योतरूपायै
खेटेश्यै
खड्गधारिण्यै ७३०
खद्योतचञ्चाकेश्यै
खेचरीखेचरार्चितायै
गदाधरीमायायै
गुर्व्यै
गुरुपुत्र्यै
गुरुप्रियायै

ॐ गीतावाद्यप्रियायै नमः
गाथायै
गजवक्त्रप्रसुवे
गत्यै ७४०
गरिष्ठायै
गणपूजायै
गूढगुल्फायै
गजेश्वर्यै
गणमान्यायै
गणेशान्यै
गाणपत्यफलप्रदायै
घर्मांशुनयनायै
घर्मायै
घोराघुर्घरनादिन्यै ७५०
घटस्तन्यै
घटाकारायै
घुसृणकुल्लितस्तन्यै
घोराख्यायै
घोरमुख्यै
घोरदैत्यनिबर्हिण्यै

ॐ घनछायायै नमः	ॐ छिल्यै नमः
घनद्युत्यै	छोटिकायै
घनवाहनपूजितायै	छिन्नमस्तकायै
टवकाटेशरूपायै ७६०	छिन्नशीर्षायै ७८०
चतुराचतुरस्तन्यै	छिन्ननासायै
चतुराननपूज्यायै	छिन्नवस्त्रावरूथिन्यै
चतुर्भुजसमर्चितायै	छिन्नपत्रायै
चर्माम्बरायै	छिन्नछल्कायै
चरगत्यै	छात्रमन्त्रानुग्राहिण्यै
चतुर्वेदमयीचलायै	छद्मिन्यै
चतुसमुद्रशयनायै	छद्मनिरतायै
चतुर्दशसुरार्चितायै	छद्मसद्मनिवासिन्यै
चकोरनयनायै	छायासुतहरायै
चम्पायै ७७०	(छव्यायै) (हव्या) ७६०
चम्पकाकुलकुन्तलायै	छलरूपसमुज्ज्वलायै
च्युताचीराम्बरायै	जयायै
चारुमूर्त्यै	विजयायै
चम्पकमालिन्यै	जेयायै
छायायै	जयमण्डलमण्डितायै
छन्नकर्यै	जयनाथप्रियायै

ॐ जप्यायै नमः
जयदायै
जयवर्धिन्यै
ज्वालामुख्यै ८००
महाज्वालायै
जगत्त्राणपरायणायै
जगद्धात्र्यै
जगद्धर्त्र्यै
जगतामुपकारिण्यै
जालन्धर्यै
जयन्त्यै
जम्भारारिवरप्रदायै
झिल्लीझङ्कारमुखायै
झरीझाङ्कारितायै ८१०
ञनरुपायै
महाञम्यै
ञहस्तायै
ञविलोचनायै
टङ्कारकारिण्यै
टीकायै

ॐ टिकाटङ्कायुधप्रियायै नमः
ठुकुराङ्ग्यै
ठलाश्रयायै
ठकारत्रयभूषणायै ८२०
डामर्यै
डमरुप्रान्तायै
डमरुप्रहितोन्मुख्यै
ढिल्यै
ढकारवायै
चाटायै
ढभूषाभूषितान‍नायै
णान्तायै
णवर्णसंयुक्तायै
णेयाणेयविनाशिन्यै ८३०
तुलात्र्यक्ष्यै
त्रिनयनायै
त्रिनेत्रवरदायिन्यै
तारातारवयातुल्यायै
तारवर्णसमन्वितायै
उग्रतारायै

ॐ महातारायै नमः
तोतुलातुलविक्रमायै
त्रिपुरात्रिपुरेशान्यै
त्रिपुरान्तकरोहिण्यै ८४०
तन्त्रैकनिलयायै
त्र्यश्रायै
तुषारांशुकलाधरायै
तपः प्रभावदायै
तृप्तायै
तपसातापहारिण्यै
तुषारकरपूर्णास्यायै
तुहिनाद्रिसुतातुषायै
तालायुधायै
तार्क्ष्यवेगायै ८५०
त्रिकूटायै
त्रिपुरेश्वर्यै
थकारकण्ठनिलयायै
थाल्यै
थल्यै
थवर्णजायै

ॐ दयात्मिकायै नमः
दीनखायै
दुःखदारिद्रनाशिन्यै
देवेश्यै ८६०
देवजनन्यै
दशविद्यादयाश्रयायै
द्युनद्यै
दैत्यसंहर्त्र्यै
दौर्भाग्यपदनाशिन्यै
दक्षिणकालिकायै
दक्षायै
दक्षयज्ञविनाशिन्यै
दानवादानवेद्राण्यै
दान्तायै ८७०
दम्बविवर्जितायै
दधीचिवरदायै
दुष्टदैत्यदर्पापहारिण्यै
दीर्घनेत्रायै
दीर्घकचायै
दुष्टारपदसंस्थितायै

ॐ धर्मध्वजायै नमः
धर्ममय्यै
धर्मराजवरप्रदायै
धनेश्वर्यै ८८०
धनिस्तुत्यायै
धनाध्यक्षायै
धनात्मिकायै
धीध्वन्यै
धवलाकारायै
धवलाम्बोजधारिण्यै
धीरसुधारिण्यै
धात्र्यै
धूः धून्यै
धुनास्तुषायै ८९०
नवीनयै
नूतनायै
नव्यायै
नलिनायतलोचनायै
नरनारायणस्तुत्यायै
नागहारविभूषणायै

ॐ नवेन्दुसन्निभायै नमः
नाम्नायै
नागकेसरमालिन्यै
नृवन्द्यायै ९००
नगरेशान्यै
नायिकानायिकेश्वर्यै
निरक्षरायै
निरालम्बायै
निर्लोभायै
निरयोनिजायै
नगदर्पाढ्यायै
निकन्दायै
नरमुण्डिन्यै
निन्दायै ९१०
नन्दफलायै
नष्टानन्दकर्मपरायणायै
नरनारीगुणप्रीतायै
नरमालाविभूषणायै
पुष्पायुधायै
पुष्पमालायै

ॐ पुष्पबाणायै नमः
प्रियस्वदायै
पुष्पवाणप्रियंकर्यै
पुष्पधामविभूषितायै ९२०
पुण्यदायै
पूर्णिमायै
पूतायै
पुण्यकोटिफलप्रदायै
पुराणागममन्त्राढ्यायै
पुराणपुरुषाकृत्यै
पुराणगोचरायै
पूर्वायै
परब्रह्मस्वरूपिण्यै
परम्पररहस्याङ्गायै ९३०
प्रह्लादपरमेश्वर्यै
फाल्गुण्यै
फाल्गुणप्रीतायै
फणिराजसमर्चितायै
फणप्रदायै
फणेश्यै

ॐ फणाकारायै नमः
फणोत्तमायै
फणिहारायै
फणिगत्यै ९४०
फणिकाञ्च्यै
फलाशनायै
बलदायै
बाल्यरूपायै
बालराक्षरमन्त्रितायै
ब्रह्मज्ञानमय्यै
ब्रह्मवाञ्छायै
ब्रह्मपदप्रदायै
ब्रह्माण्यै
बृहत्यै ९५०
व्रीडायै
ब्रह्मावर्तप्रवर्तिन्यै
ब्रह्मरूपायै
पराव्रज्यायै
ब्रह्ममुण्डैकमालिन्यै
बिन्दुभूषायै

ॐ बिन्दुमात्रे नमः
बिम्बोष्ठ्यै
बगुलामुख्यै
ब्रह्मास्त्रविद्यायै १६०
ब्रह्माण्यै
ब्रह्माच्युतनमस्कृतायै
भद्रकाल्यै
सदाभद्रायै
भीमेश्यै
भुवनेश्वर्यै
भैरवाकाकिल्लोलायै
भैरवीभैरवार्चितायै
भानव्यै
भासुदाम्भोजायै १७०
भासुदास्यभयार्तिहायै
भीडायै
भागीरथ्यै
भद्रायै
सुभद्रायै
भद्रवर्धिन्यै

ॐ महामायायै नमः
महाशान्तायै
मातङ्ग्यै
मीनतर्पितायै १८०
मोदकाहारसंतुष्टयायै
मालिन्यै
मानवर्धिन्यै
मनोज्ञायै
शष्कुलीकर्णायै
मायिन्यै
मधुराक्षरायै
मायाबीजवत्यै
महामायै
भयनिसूदिन्यै १९०
माधव्यै
मन्दगायै
माध्व्यै
मदिरारूणलोचनायै
महोत्साहायै
गणोपेतायै
माननीयामहर्षिभ्यै

ॐ मत्तमातङ्गायै नमः
गोमत्तायै
मन्मथारिवरप्रदायै १०००
मयूरकेतुजनन्यै
मन्त्रराजविभूषितायै
यक्षिण्यै
योगिन्यै
योग्यायै
याज्ञकीयोगवत्सलायै
यशोवत्यै
यशोधात्र्यै
यक्षभूतदयापरायै
यमस्वसायै १०
यमज्ञ्यै
यजमानवरप्रदायै
रात्र्यै
रात्रिञ्चरघ्न्यै
राक्षसीरसिकारसायै
रजोवत्यै
रतिशान्त्यै

ॐ राजमातङ्गिनीपरायै नमः
राजराजेश्वर्यै
राज्ञ्यै २०
रसास्वादविचक्षणायै
ललनानूतनाकारायै
लक्ष्मीनाथसमर्चितायै
लक्ष्यै
सिद्धलक्ष्म्यै
महालक्ष्मीललद्रसायै
लवङ्गकुसुमप्रीतायै
लवङ्गफलतोषितायै
लाक्षारुणायै
ललत्यायै ३०
लाङ्गुलिवरदायिन्यै
वातात्मजप्रियायै
वीर्यायै
वरदावानरीश्वर्यै
विज्ञानकारिण्यै
वेण्यायै
वरदायै

ॐ वरदेश्वर्यै नमः
विद्यावत्यै
वैद्यमात्रे ४०
विद्याहारविभूषणायै
विष्णुवक्षस्थलस्थायै
वामदेवाङ्कवासिन्यै
वामाचारप्रियायै
वल्ल्यै
विवत्वन्सोमदायिन्यै
शारदायै
शरदम्भोजवारिण्यै
शूलधारिण्यै
शशाङ्कमुकुटायै ५०
शष्पायै
शेषशायिनमस्कृतायै
श्यामाश्यामाम्बरायै
श्याममुख्यै
श्रीपतिसेवितायै
षोडश्यै
षड्सायै

ॐ षड्जायै नमः
षडाननप्रियङ्कर्यै
षडंघ्रिकूजितायै ६०
षष्ट्यै
षोडशाम्बरभूषितायै
षोडशाराब्जनिलयायै
षोडश्यै
षोडशाक्षर्यै
सौं बीजमण्डितायै
सर्वस्यै
सर्वगासर्वरुपिण्यै
समस्तनरकस्त्रातायै
समस्तदुरितापहायै ७०
सम्पत्कर्यै
महासम्पते
सर्वदायै
सर्वतोमुख्यै
सूक्ष्माकर्यै
सतीसीतायै
समस्तभुवनाश्रयायै

ॐ सर्वसंस्कारसम्पत्त्यै नमः

सर्वसंस्कारवासनायै

हरिप्रियायै ८०

हरिस्तुत्यायै

हरिवाहायै

हरीश्वर्यै

हालाप्रियायै

हलिमुख्यै

हाटकेश्यै

हृदेश्वर्यै

ह्रीं बीजमुकुटायै

ॐ ह्रीः हरप्रियकारिण्यै नमः

क्षामायै ९०

क्षान्तायै

क्षोण्यै

क्षत्रियीमन्त्ररूपिण्यै

पञ्चात्मिकायै

पञ्चवर्णायै

पञ्चतिग्मायै

सुभेदिन्यै

मुक्तिदायै

मुनिवनेश्यै

ॐ शाण्डिल्यवरदायिन्यै नमः १००

ॐ नम इति

श्रीदेव्यार्पणमस्तु

ॐ = देवनागरी

श्री श्री शैलस्थिताया प्रहसित वदना पार्वती शूल हस्ता ।
वह्नि सूर्येन्दु नेत्रा त्रिभुवन जननी षड्भुजा सर्वशक्तिः ।
शाण्डिल्येनोपनीता जयति भगवती भक्तिगम्या नतानाम् ।
सा नः सिंहासहनस्था ह्यभिमत फलदा शारदा शं करोतु ॥

मुद्रक :
श्रीहरिनाम प्रेस, बाग बुन्देला, वृन्दावन – 281121